

अभिमन्यु अनत के कथा साहित्य में युगीन परिदृश्य

-डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता

सारांश- अभिमन्यु अनत के रचना संसार की जो विशिष्टता मुझे लगातार आप्लावित और आकर्षित करती रही है, वह है साधारण में से असाधारण का अन्वेषण। मुहावरे की भाषा में कहूँ तो इसे साधारण की विशिष्टता कहा जा सकता है। अभिमन्यु के रचनात्मक भूगोल में ग्राम समाज, मजदूर वर्ग, मध्य वर्ग, अपनी निपट मजबूरियों में भी उत्सव तलाश लेने वाले उखड़े हुए लोग, रुके हुए लोग, मानसिक, आत्मिक और अपने अस्तित्व की जिरह में उलझी और नया रास्ता तलाशती औरतें, यथास्थिति के तंत्र से टकराते विचारशील व्यक्ति-सब मौजूद हैं यहाँ। साथ ही उनका यथार्थ और साधारण प्रसंगों में छिपे एवं अनकहे संस्कृति के बड़े प्रसंग उसी तरह शब्दों की सतहों में पैबस्त हैं जैसे नदी, तालाबों में मछलियाँ रहती हैं... और फिर शब्द संवेदना और कला का सहज समायोजन। अभिमन्यु अनत अपने देश के भूमि पुत्र हैं तथा अपनी जातीय परम्परा के राष्ट्रीय उपन्यासकार हैं। मॉरिशस की भूमि, वहाँ की संस्कृति, वहाँ के अंचल, वहाँ की सन्तानें सभी उनकी लेखकीय आत्मा के अंग हैं। वे अपने देश के वर्तमान की त्रासदियों, क्रियाकलापों, औपनिवेशिक दबाव और विसंस्कृतिकरण की दुष्प्रवृत्तियों का बड़ी यथार्थता के साथ उद्घाटन करते हैं तथा जीवन मूल्यों तथा आदर्शवाद को साथ लेकर चलते हैं। उन्होंने कई बार अपनी लेखनी के माध्यम से सत्ता को चुनौती प्रदान की। उन्हें कभी भी सत्ता का भय आक्रांत नहीं कर पाया। उनकी लेखनी में सदैव मॉरिशस के आमजन की परेशानियों को उकेरा जाता रहा है।

बीज शब्द- अभिमन्यु अनत, कथा साहित्य, युगीन परिदृश्य।

भूमिका- एक देश से दूसरे देश को जाना ही प्रवास नहीं है। अपने देश में भी व्यक्ति प्रवासी होता है। जब कोई व्यक्ति अपने गृह-प्रदेश से दूसरे प्रदेश में रोज़ी रोटी कमाने के लिए जाता है तो वह भी प्रवासी कहलाता है। आज भारत के बाहर भी एक भारत बसता है, जिसके निवासी सच्चे मायने में भारतीय हैं। ये भारतवंशी 19वीं शताब्दी से ही अंग्रेजों के द्वारा उनके नए उपनिवेशों में मजदूरी करवाने के लिए गुलामों की तरह लाये गए थे और वे एक रोटी एवं लंगोटी के साथ वहाँ गए थे तथा फिर कभी भी भारत वापस न आ सके। इन प्रवासी भारतीयों में से कुछ पढ़े-लिखे भी थे, जिन्होंने अपनी भाषा और संस्कृति को बचाकर पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुरक्षित रखा। मॉरिशस, गुयाना, सूरीनाम फिजी इत्यादि देशों में आज भी भारतवंशी 'हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान' को हृदय से लगाये हुए हैं और हिंदी साहित्य की शोभा बढ़ा रहे हैं। प्रवासी लेखक दो संस्कृतियों को साथ लेकर चलता है। इन संस्कृतियों का वह अपनी भाषा के माध्यम से मिलन करवाता है। नवीन रचनात्मक सृजन का मार्ग प्रशस्त होता है। वर्तमान के प्रवासी हिंदी साहित्य में विश्व के इन विभिन्न लेखकों एवं रचनाकारों को सम्मिलित किया जाता है जो रोजगार की खोज में भारत को छोड़ विश्व के अन्य क्षेत्रों में जा बसे हैं। भारत से जाने के बाद जिस देश में उनका

निवास रहा, वहाँ के जनजीवन और रीति-रिवाजों को स्वीकारते हुए उन्होंने जीवन का नया मार्ग बनाया। असगर वजाहत हिंदी के प्रवासी साहित्य पर विचार करते हुए कहते हैं कि "न तो प्रवास कोई नयी स्थिति है और न प्रवासी साहित्य ही कोई नई खोज है, लेकिन बीसवीं शताब्दी में भारतीय मूल के लोगों ने एक देश में नहीं बल्कि लगभग संसार के हर कोने में जिस अस्मिता को जगाया है और जो पहचान स्थापित की है, वह इससे पहले सम्भव न थी। आज का प्रवासी भारतीय पहले के प्रवासी से भिन्न है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि प्रवास के इस युग में तकनीक और विज्ञान ने दूरियों के साथ-साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान के रास्ते को प्रशस्त भी किया है। आज प्रवासी भारतीय के लिए भारत दूर होते हुए भी पास है और प्रवास देश की संस्कृति से उसका जीवंत सम्बन्ध बना हुआ है।" भारतीय प्रवासी अपने कण-कण में भारतीय संस्कृति को अपनाये हुए हैं। उनका अपना सांस्कृतिक इतिहास है जिसे आधार बनाकर वह भारत को अपने हृदय में जीवित रखे हुए है। भारत की परंपराएँ, जीवन-दर्शन एवं व्यापक धर्म को वहाँ के लोगों ने सुरक्षित रखा हुआ है। सांस्कृतिक संबंधों को स्थापित करने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह निकटता भारतीय भाषाओं से गहरे संबंध के कारण हुई है। यह निकटता भारतीय जीवन दर्शन का प्रतिबिम्ब है जो सांस्कृतिक परंपराओं, विचारों एवं मूल्यों की आधारशिला है।

‘लाल पसीना’ में अभिमन्यु अनंत ने भारतीय अनुबंधित कामगारों की जो छवि चित्रित की है वह अब इतिहास का हिस्सा है, किन्तु उसके पीछे गोरी जाति के मसूबों के इतिहास को जानना, उनके रहस्यों से परिचित होना आगामी भविष्य को सही अर्थों में जानने की दिशा का एक कदम है। इस दृष्टि से अभिमन्यु अनंत ने अतीत की महत्वपूर्ण पीठिका का भी जीवन्त बयान अपने ही अलग शैलिक भावाधारों पर किया है, जिसे आज हम आसानी से पश्चिमी मनोवृत्ति के अवधारणात्मक स्वरूप के समानरूप पा सकते हैं। आज परिस्थितियाँ चाहे बदल गई हों, ज्ञान के क्षेत्रों में हुए चमत्कारिक विकास ने चाहे पश्चिमी मानसिकता के इन विरोधाभासों को ढक लिया हो। पश्चिमी दृष्टि के नये भटकाव चाहे स्वयं को शेष दुनिया के उद्धारक के रूप में प्रकट करने के लिए बेचैन हों उनके मनोलोक में वह मनोवृत्ति अब भी वैसी ही है जैसी वह कुछ शताब्दियों पहले थी। अभिमन्यु अनंत ने आरंभ में ही गोरों की इस मानसिकता का पर्दाफाश किया और यथार्थवादी रचनाधर्मियों की तरह जो तत्काल का सच था उसे चित्रित किया। “लाल पसीना” भारत से बाहर लिखा गया पहला उपन्यास है जो अनुगुंज के रूप में भारत को ही चित्रित करता है। भारत की सदियों से विकसित परम्पराएँ हैं जो धीरे-धीरे अपने नये रूप में एक शक्ति के रूप में पल्लवित होती है। जाहिर है जो लोग मजदूरों के रूप में मॉरिशस पहुँचते हैं। अपनी आर्थिक विपन्नता के बावजूद अपनी उस सांस्कृतिक उच्चता से पुष्ट हैं जो परिवार, समाज और अन्ततः राष्ट्र के भावाधार से पोषित है। अत्याचारों की धारावाही मार से संघर्षशील जन विचलित नहीं होते अपितु अपने सतत संघर्ष से वे धीरे-धीरे बाधाओं के सीमान्तों पर विजय प्राप्त करते चलते हैं। किसन सिंह की परम्परा

का मदन इस प्रश्न पर गौर करता है “वह सोचता कि व्यवस्था और कानून तो उन लोगों से उतनी ही दूर है जितना कि भगवान... शायद उससे भी दूर और फिर उस कानून से कहीं अधिक शक्तिशाली और तत्कालीन था कोठियों का अपना कानून। किसन सिंह कहता- जेकर लाठी ओकर भैंस, जेकर पैसा ओकर कानून। देवराज ने अपने प्राण कोठी के लठैतों के हवाले कर दिये थे। उसी दिन कोठी के लठैतों को आदेश मिला था कि देवराज को भी सुनसान इलाके में किसी पेड़ से झुला दिया जाये...।” ‘और नदी बहती रही’ उपन्यास से लेकर ‘चलती रहो अनुपमा’ उपन्यास तक उन्होंने विविध समस्याओं को उभारा है। अनत जी अपने उपन्यासों में उनके पुरुष-पात्र ही नहीं, अपितु नारी-पात्र को भी सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूक दिखाते हैं। उनकी कुछ नारी-पात्र परम्परा का निर्वाह करने वाली हैं, पुरुष-अहं को सन्तुष्ट करने वाली है। ‘और नदी बहती रही’ की सुमित्रा एवं कृष्णावती पुरुष अहं को संतुष्ट करने में सहायता पहुँचाती हैं। ‘एक बीघा प्यार’ की करूणा भी हीरा से प्रेम करती है परंतु छिपाती है। अनत जी के साहित्य में आये स्त्री पात्र किसी परम्परा को नहीं तोड़ती है और न ही वासनात्मक रूप का सहारा लेती है बल्कि अपने संयम, त्याग एवं आदर्श-प्रेम के बल पर ‘चौथा प्राणी’, ‘तपती दोपहरी’ और ‘कुँहासे का दायरा’ आदि उपन्यासों की वीणा, साधना, उर्मिला, शीला आदि ऐसी ही नारी-पात्र है, जिन्होंने अपने त्याग, संयम, उदारता एवं नैतिकता से पुरुष पात्रों को सही दिशा दी है। अनत जी विश्लेषणात्मक पद्धति के अन्तर्गत पात्रों का मनोविश्लेषण करते हैं। पात्रों के मन में जो बातें उठती रहती हैं, उसे बड़े स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत करते हैं। ‘तपती दोपहरी’ में राजेन बटुए के चार सौ रुपये को देखकर मन ही मन तर्क करने लगता है। इससे - ‘और भी बहुत लाभ हो सकते थे। उसकी मां ने दोनों बकरियाँ केवल इसलिए बेच दी थीं, क्योंकि उससे बोझ नहीं उठाय जाता। राजेन साइकिल पर घास भी ला सकेगा, लेकिन इन असंभव बातों को वह क्यों सोच रहा था? बटुए ने उसे ऐसा सोचने को विवश किया था? बटुए के सहारे उसे ऐसा सोचने का अधिकार ही क्या था। अधिकार क्यों नहीं? बटुआ उसकी जेब में था। उसकी जेब की चीज भी उसकी अपनी नहीं हो सकती? और जब उसके भीतर से आवाज आयी कि यह चोरी हुई, तो वह चौंक उठा तिलमिलाते स्वर में पूछा, ‘चोरी कैसे हो सकती है? चोरी कैसे नहीं? क्योंकि मिली हुई चीज चोरी नहीं हो सकती। मिली हुई चीज अपनी होती है क्या?’“ मनोविज्ञान के अन्तर्गत फ्रॉयड, एडलर, युंग के सिद्धांतों के अनुसार अनत जी पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन विस्तार से करते हैं। अनत जी के उपन्यास ‘लाल पसीना’, ‘गांधीजी बोले थे’, ‘पसीना बहता रहा’, ‘हड़ताल कल होगी’ आदि में मजदूरों के मालिकों के प्रति विद्रोह को दिखाया है। उपन्यास के नायक अपनी अस्मिता बचाने के लिए मालिकों से विद्रोह करते हैं। इनके पात्रों में शुरू में जो मंद-आक्रोश व्याप्त था, वह अब शनैःशनैः सक्रिय विद्रोह में बदलने लगता है। उपन्यासों के विकास-क्रम से यह बात साफ सिद्ध हो जाती है। उनके उपन्यासों के पात्र प्रायः आर्थिक शोषण, विविध सामाजिक कठिनाइयों संबंधी कुंठाओं से ग्रस्त हैं। सामाजिक मनोवैज्ञानिक ढंग से नारी एवं पुरुष दोनों ही प्रकार के पात्रों का वातावरण के अनुकूल चित्रण

हुआ है। इस चित्रण विधि में पात्रों को भी माध्यम बनाया गया है। जिससे पात्र अपनी मनःस्थिति को स्पष्ट करने में सक्षम हुए हैं। मॉरिशस में फ्रेंच, अंग्रेजी, क्रिओली और भोजपुरी हिंदी का प्रयोग होता रहा है। उर्दू एवं अरबी-फारसी का प्रयोग हिंदी के साथ होता है। फ्रेंच एवं अंग्रेजी भाषा अभिजात्य-वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। भोजपुरी हिंदी प्रवासी भारतीय मजदूरों की भाषा है तथा फ्रेंच मालिकों एवं अफ्रीकी दासों के मध्य काम के दौरान प्रयुक्त होने वाली भाषा क्रिओली है। अनत जी के उपन्यासों में सभी भाषाओं का प्रयोग मिलता है और यही कारण है कि वे स्वाभाविकता एवं विश्वसनीयता के अधिक निकट है। उनकी भाषा लाक्षणिकता एवं व्यंजना से परिपूर्ण है- "मारीच में अनाज, पैसा और सोना आदमी के लिए तड़पता था। अलबत्ता ठण्ड के कारण सिकुड़े से एक दो तारे झिलमिलाते दिखायी दिये जैसे कोई हाथों से मुँह छिपाकर अंगुलियों के बीच से झाँक रहा हो। 'अंधेरा भी ठिठुरा-सा लग रहा था।" अनत जी के उपन्यासों एवं कहानियों में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण साहित्य में मुहावरों, लोकोक्तियों एवं सूक्तियों के प्रयोग से भाषा जीवनानुभूतियों को अभिव्यक्त करने में सहायक हुई है। इसमें संदेह नहीं है कि अनत जी की भाषा में मौलिकता एवं निजीपन है। अनत जी के उपन्यासों की तरह इनकी कहानियाँ भी जन-जीवन के अधिक नजदीक ठहरती है। शायद इसीलिए अनत जी जन-जीवन के चित्ते रचनाकार कहलाते हैं। सामाजिक जन-जीवन में घटित होने वाली घटनाओं का यथार्थ चित्रण करना ही उनका लक्ष्य है। उन्होंने समाज में जो कुछ देखा एवं अनुभव किया, उसी का मर्मस्पर्शी चित्रण भी किया। उनकी प्रत्येक कहानी मॉरिशस-समाज की भावनाओं, परिस्थितियों एवं मनःस्थितियों को यथार्थ के धरातल पर अभिव्यक्त करने में सक्षम हुई है। उनकी 'माथे का टीका' कहानी यथार्थ की अनुभूति को ईमानदारी के साथ व्यक्त करती है। 'कोलाहल' एवं 'अस्वीकार' कहानी में तो मॉरिशस समाज की वास्तविकता साकार हो उठी है। कहीं अभाव है, तो कहीं पैसों का अपार भण्डार। 'कोलाहल' कहानी में एक यथार्थ दृश्य इस रूप में है - "वैलिंग्टन स्ट्रीट से होते हुए हम उस स्थान पर आ गये, जहाँ दिन में पैसों की गन्ध और झंकार आती है।" 'अस्वीकार' कहानी में भी यही स्थिति है- "इस बार उस गली में पहुँच जाता हूँ जहाँ कि पैसों की गन्ध नाक को सर्द देती-सी लगती हो।"

अनत जी अपनी काव्य-यात्रा में मॉरिशस की ही काव्य-यात्रा को अभिव्यक्त करते हैं। वे अपनी कविताओं में इतिहास से लेकर वर्तमान तक को समेटे हुए हैं। अपनी कविताओं में इन्होंने अपनी 'मॉरिशसीय अस्मिता' को जीवित रखा है। इनकी कविताओं में आधुनिक परिवेश तथा चेतना की अभिव्यक्ति हुई है और साधारण मनुष्य के स्वाभिमान, जिजीविषा, अस्मिता, शोषण से मुक्ति से जोड़कर उसके बेहतर जीवन के लिए संघर्ष किया है। अभिमन्यु से पूर्व मॉरिशस के हिंदी कवि भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का आख्यान कर चुके थे, परन्तु अनत में संवेदना का घनत्व और विस्फोट है, चीखता इतिहास और वर्तमान की भयानकताएँ हैं। अतीत एवं वर्तमान को व्यक्त करने से उनकी संवेदनाएँ और गहरी हो गयी है। इनके सम्पूर्ण कविता संग्रहों में ऐसी कई कविताएँ हैं जो

अतीत में हुए क्रूर अत्याचारों को निरावृत्त करती हैं। ऐसी कविताओं में ‘अधगले पंजरों पर’, ‘गिरवी पड़ी किरणों’, ‘अनफूला कैक्टस’, ‘काले माथे का सफेद सोना’, ‘लम्बी मृत्यु इतिहास की’, ‘श्वेत रक्त’, ‘गूंगा इतिहास’, ‘भेंट’ आदि उल्लेखनीय हैं। इन कविताओं के माध्यम से मालिक-मजदूर के रिश्ते, मालिक की क्रूरता, मजदूरों द्वारा भूखे पेट मालिकों के खेतों में बहाये गये पसीने, पीठ पर कोड़ों के निशान एवं वर्तमान से दूर मजदूर की स्थिति को दर्शाया गया है। किसी भी लेखक की शैली उसकी अपनी निजी विशेषता एवं मौलिकता है। शैली में ही उसका व्यक्तित्व अनुस्यूत रहता है। इस दृष्टि से अनंत जी की शैली में उनका व्यक्तित्व निहित है। जीवन की जीवन्तता को अभिव्यक्त करने के लिए लेखक ने विविध शैलियों का आश्रय लिया है। प्रतीकात्मक, सांकेतिक एवं व्यंग्य शैली के माध्यम से लेखक को इस क्षेत्र में व्यापक सफलता मिली है। विषय-वस्तु के अनुरूप कहीं-कहीं भाषा-शैली सरल, सुबोध एवं प्रवाहमय है, तो कहीं-कहीं आलंकारिक एवं काव्यात्मक। प्रेम रोमांस के स्थलों पर शैली-माधुर्य सहज ही अभिव्यक्त हुआ है।

उनके नाटक भी इस दिशा में महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं। नाटक और एकांकी पर मॉरिशस में सर्वाधिक काम अभिमन्यु अनंत ने किया है। उन्होंने विरोध (1981) ‘तीन दृश्य’ (1981), ‘गूंगा इतिहास’ (1983), ‘रोक लो कान्हा’ (1986), और ‘उड़ते रहेंगे सफेद बाज’ (1988), ‘भरत सम भाई’ (1990), ‘देख कबीरा हाँसी’। इन्हीं के सम्पादन में महात्मा गांधी संस्थान से एक एकांकी संग्रह ‘मॉरिशस के हिंदी एकांकी’ (1990) में प्रकाशित हुआ है। 1993 में प्रकाशित ‘बसन्त चयनिका’ में भी 12 लेखकों के इतने ही एकांकी संग्रहित हैं। “नाटक एवं एकांकी के लेखन व मंचन के क्षेत्र में अभिमन्यु अनंत का नाम उल्लेखनीय है। मॉरिशस में इनके द्वारा लिखित ‘विरोध’ और ‘तीन दृश्य’ को नाटक कहा जाए या एकांकी इस पर विरोध हो सकता है। इनके नाटकों और एकांकी की कथावस्तु मॉरिशस के अतीत एवं वर्तमान से जुड़ी होती है। ये एकांकियाँ भारतीय मजदूरों के ऐतिहासिक संघर्ष एवं यातनाओं की पृष्ठभूमि पर लिखे गये हैं। इस संदर्भ में इनकी प्रमुख एकांकी ‘मारीशा गवाही देना’ है। एकांकी ‘जारी रहे तलाश’ में दर्शन व विज्ञान के गूढ़ चिन्तन पर आधारित है। कुछ नाटकों में समसामयिक सामाजिक समस्याओं पर विक्षोभ एवं व्यंग्य है, जैसे ‘विरोध’ एवं ‘तीन दृश्य’।” “विरोध’ नाटक में मासा प्रमुख पात्र है जो बेकारी और महंगाई से पीड़ित है। नौकरी की तलाश में भाई-भतीजावाद का शिकार हो चुका है। वह अपने मित्रों केतु और सिंहल के साथ यूनियन में शामिल होकर विरोध प्रदर्शन करता है। कुछ दिनों की नेतागिरी के बाद उसे नौकरी मिल जाती है। ‘तीन दृश्य’ नाटक में पहला दृश्य ‘मूँगफली का छिलका’ दूसरा दृश्य ‘सोना और धूल’ तथा तीसरा दृश्य ‘कौन हो तुम’ नाम से है। तीनों दृश्यों की कहानियाँ अलग-अलग होकर भी कहीं-कहीं एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। ‘मूँगफली का छिलका’ में हास्य-व्यंग्य के साथ सामाजिक विसंगतियों पर करारा प्रहार है।”¹

मॉरिशस में मजदूरों को जमींदारों द्वारा यातनाएँ दी जाती थी। उनके बीच आपसी फूट डालकर उन्हें संगठित होने से रोका जाता था। उनके शोषण की कोई सीमा नहीं होती है। अनंत जी ने 'गूंगा इतिहास' नाटक भारतीय प्रवासियों के मॉरिशस आगमन की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर मंचन के लक्ष्य से लिखा था। इसने राजेन्द्र प्रसाद सदासिंह के निर्देशन में न केवल मॉरिशस बल्कि भारत में भी बम्बई, नई दिल्ली, लखनऊ, भोपाल, पटना व बनारस में धूम मचा दी। यह नाटक मॉरिशस का सफलतम नाटक कहा जाता है। शासकों के शोषण का इतिहास है यह। अनंत जी के अनुसार 'शासकों' द्वारा लिखवाया गया इतिहास शोषितों के संघर्ष और यातनाओं का सच्चा लेखा-जोखा नहीं हुआ करता। 'गूंगा इतिहास' में मालिकों के उन चाटुकारों का वर्णन भी है जो अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए अपने ही लोगों में फूट डालना चाहते हैं। उदाहरणार्थ इस नाटक का एक अंश देख सकते हैं- 'रमेश्वर : तू हिन्दू-मुसलमान के बात करत हवे सरदार। हमनी त भारत में एक गांव के रहली सा। एक ही जहाज से हिंया अयली सा। एक ही संगे हिंया भगवान के धाम-पानी, साहब के लात-घूसा और सरदार लोगन के गाली-गलौज सहली सा। किस्मत के भूख-प्यास सभी कुछ त संगे-संगे सहली स, त फिर एक ही संग हुक्का-पानी में का बाटे? गुन्नू : तुम लोग साले गालिज जात के हो। हुकुम : कल तक त तू भी ई हे रहले भैया।'²

अभिमन्यु अनंत ने निबन्ध विधा में भी अपना हाथ आजमाया है। इन्होंने कुछ लघु-निबंध ही लिखे हैं, जो कि मौका से प्रकाशित मासिक पत्रिका 'वसन्त' के सम्पादकीय लेख के प्रतिरूप है। इन्होंने कई प्रकाशनों का सम्पादन भी किया है जैसे कि काव्य-संग्रह, कहानी-संग्रह व एकांकी संग्रह आदि। इन पर सम्पादकीय आलोचनात्मक समीक्षा के लेख हैं। डॉ. सतीश चन्द्र अग्रवाल, अनंत जी की बहुमुखी प्रतिभा के विषय में लिखते हैं - "अभिमन्यु अनंत बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। उनकी लेखनी ने जिस भावधारा या विचार को छुआ वह चमत्कृत हो उठा। उनके सम्पादकीय लेखों की विविधता के बीच उत्कृष्टता इसका प्रमाण है। 'आत्म विज्ञापन' में अनंत जी के चार लेख जो निबंध के ही लघु संस्करण हैं मिलते हैं वे हैं 'उपभोक्ता संस्कृति अब गांवों में, प्रेमचन्द और भारतीय उपन्यासों में भारतीयता', 'देशी भाषाओं के विरुद्ध साम्राज्यवादी षड्यंत्र' और 'भारत कब हिंदी बोलेगा'? उनका व्यंग्य इतना धारदार और पैना है कि सामने वाला तिलमिलाकर रह जाए।'³

अभिमन्यु अनंत जी में प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल की जीवनी 'जन-आंदोलन के प्रणेता' के रूप में लिखी है। इन्होंने यात्रा वृत्तान्त भी लिखे हैं जो कि उनकी पुस्तक आत्मविज्ञापन में मिलते हैं जैसे कि 'मेरी यात्राएँ', 'मेरी क्युबेक यात्रा' व 'कुछ यादें बम्बई की।' संस्मरण विधा में भी इन्होंने लिखा है जो 'वसन्त' एवं भारत की पत्र-पत्रिकाओं में छपे हैं। 'आत्म विज्ञापन' में ऐसे दस संस्मरणात्मक लेखों को संकलित किया है। वे इस प्रकार हैं- 'प्रधानमंत्री का वह उत्तर', आज भी शूद्र हूँ 'ईंट की रोटी', मैं जब चरित्रहीन पढ़ रहा था', 'हिन्दी जगत् का वह पहला उपहार', 'कारण प्रमाण-पत्रों के अभाव का', 'जन्म बधाई', 'डॉक्टरों का मुर्दा', 'जब चीफी मुझे बुलाने

आयी थी' और 'भीख का वह आधुनिक तरीका'। अनत जी की भेंटवार्ता भी पत्र-पत्रिकाओं में छपी है। अनत जी की कृति 'आत्म विज्ञापन' इस संदर्भ में प्रमुख है। डॉ. कमल किशोर गोयनका की 'अभिमन्यु अनत एक बातचीत' में लम्बा साक्षात्कार दिया गया है। हास्य-व्यंग्य के क्षेत्र में उन्होंने एक लेख 'धमाका' लिखा है। परंतु उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है कि यह शुद्ध व्यंग्य नहीं है।

अभिमन्यु अनत की कहानियों में युगीन चेतना -

'खामोशी के चीत्कार' (1976) कहानी संग्रह:- इसमें कुल तेरह कहानियाँ संग्रहित हैं- (1) 'माथे का टीका', (2) खामोशी के चीत्कार (3) स्वर्ग के उस पार (4) वापसी सूरज की (5) कोलाहल (6) नयी तलाश (7) मुसाफिर (8) द्विविधा (9) अस्वीकार (10) जहर और दवा (11) धमाका (12) सुलह (13) रात का पार्टी के बाद।

कहानी 'माथे का टीका' में ढोंगी पुजारी का चरित्र उघाड़ा गया है। समाज में धर्म के ठेकेदार के रूप में पूज्य माने जाने वाला पुजारी वास्तविकता में वेश्यागामी है वह पतित चरित्र का है। वह अपने माथे पर जो चन्दन का तिलक लगाता है उसे लेखक ने एलास्टोप्लास्ट का टुकड़ा कहा है जो उसके सिर पर दुष्कर्मों के प्रतीक रूप में चिपका दिया गया है। 'सुलह' कहानी में दाम्पत्य जीवन में आयी कड़वाहट और संशय को समाप्त कर वैचारिक वार्तालाप पर जोर दिया गया है। 'जहर और दवा' कहानी में पुत्र द्वारा पिता की प्रेमिका से प्रेम कर अपने टूटते घर को बचाने का प्रयास किया जाता है। पिता की प्रेमिका से पुत्र का प्रेम एक पिता को पुनः अपनी पत्नी की तरफ लौटा देता है। 'द्विविधा' में विधवा विवाह के दौरान उठने वाले संशय और अन्तर्द्वंद्व को दिखाने के साथ ही विधवा-विवाह का समर्थन किया गया है। जिससे विधवा स्त्री के प्रति समाज की सोच में परिवर्तन आ सके। 'मुसाफिर' कहानी में नायिका नीलम के प्यार की बात परियों की रानी के प्यार द्वारा वर्णित हुई है। 'धमाका' कहानी का रूप एक प्रहसन का है। इसमें पति-पत्नी के कटु सम्बन्धों को प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी में एक ओर पति-पत्नी के संबंधों की कटुता की जानकारी मिलती है, वहीं दूसरी ओर बेरोजगारी, राजनीति की नपुंसकता, स्वतंत्रता की कृत्रिमता आदि को युवा-आंदोलनकारियों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। उचित मांगों को कितने दमनात्मक ढंग से कुचला जाता है, यह धमाका कहानी में अश्रुगैस और हथगोले की कार्यविधि से स्पष्ट होता है। 'अस्वीकार' कहानी के माध्यम से समस्त मॉरिशसीय जीवन में व्याप्त राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं साहित्यिक क्षेत्र की वास्तविकता को अस्वीकार कर अवास्तविकता को ही सत्य मानकर जीवन-मूल्यों के प्रति अग्रसरित होने वाले लोगों पर व्यंग्य किया है।

'रात की पार्टी के बाद' कहानी में मध्यम वर्ग की आर्थिक घुटन-टूटन को दर्शाया गया है आर्थिक निर्बलता के कारण पति-पत्नी के बीच होने वाले झगड़े को दिखाया गया है महँगाई की मार इस स्थिति को ओर अधिक

भयावह कर देती है जब किसी खुशखबरी पर दोस्तों को पार्टी दी जाती है तब दोस्त बिना सोचे समझे खूब छककर खाते हैं और पीते हैं। बाद में रात की पार्टी के बाद दूसरे दिन विजू और माला के घर में उनके खाने के लिए मात्र सूखी रोटियाँ ही बची हैं, जिसे विजू किसी तरह खाता है। 'वापसी सूरज की' में अतीत को भुला न पाने का गम किस कदर मनुष्य पर हावी हो जाता है उसका विश्लेषण किया गया है। इस कहानी का नायक लालमन है। उसकी पूर्व प्रेमिका ताहिरा रहती है बाद में प्रभा से उसकी शादी हो जाती है। जिससे तारा, मुकेश, गीता और नीला नाम की सन्तानें हुई हैं। यथार्थ-जीवन में आर्थिक कठिनाइयों से पीड़ित होकर लालमन समुद्र के किनारे गम भुलाने के लिए गया है। चट्टान की आड़ में बैठे बालक के अदम्य साहस एवं निष्ठा के साथ मछली फँसाने की विधि को वह देखता रहता है और अर्द्ध रात्रि के होने पर लौटते हुए बालक से लालमन मछली खरीदकर घर की ओर चल देता है। सूर्यास्त से पूर्व का निकला हुआ लालमन रात्रि के अवसान के पश्चात् अपने घर के आँगन में सूरज की वापसी देखना चाहता है। जिजीविषा की प्रखर कठोरता के कारण व्यक्ति अतीत की सुखद स्मृतियों की ओर झाँककर परितोष प्राप्त करना चाहता है।

इंसान और मशीन (1976) :- इसमें कुल 44 लघु-कथाएँ संग्रहीत हैं “(1) मुट्टी में बन्द उजाला, (2) बड़ों से सीखा पाठ, (3) धृतराष्ट्र और शकुनि के बीच, (4) देश का कपड़ा, (5) भाग्यफल, (6) इन्सान और मशीन, (7) और जब बत्ती जली, (8) मंजिल के दो फासले, (9) अपना रंग, (10) नचिकेता, (11) मोह, (12) समय, (13) परिणाम, (14) प्रमाण-पत्र (15) फार्मूला, (16) भगवान जिन्दा है, (17) सच्चाई, (18) सूचना, (19) सबसे पहले कौन, (20) कीटाणु, (21) नन्हें मछुए का भाग्य, (22) वह, (23) मजदूर चूसी हुई ईख, (24) भय की खोज, (25) फैसला, (26) दूध, (27) इन्सान और कुत्ता, (28) कड़वाहट बीयर की, (29) चारा, (30) उद्धाटन, (31) एकलव्य, (32) भिखारी, (33) जीवित मुर्दा (34) विदुर की साग, (35) अखबार, (40) शकुन्तला, (41) प्रभाव, (42) भीतर की बातें, (43) अपने लोग, (44) रंगा ये सारी लघु-कथाएँ मॉरिशस की सामाजिक, राजनीतिक-आर्थिक स्थिति पर व्यंग्य करने वाली हैं।”⁴

वह बीच का आदमी (1981) :- इस कहानी संग्रह में कुल अठारह कहानियाँ संकलित हैं। 'वह बीच का आदमी' कहानी का नायक रामचरितर है। रामचरितर के गांव की जमीन सरकार हवाई अड्डा बनवाने के लिए लेना चाहती है और उसके बदले मुआवजा देने की बात भी करती है। गांव के दूसरे लोग इन सबके लिए तैयार हो जाते हैं। परंतु रामचरितर इस पूरे खेल में सरकार का ही फायदा मानता है। सरकार मुआवजा देकर लोगों के मुंह पर ताला लगा देती है और लोग भी मुआवजा लेकर सरकार से संघर्ष करना बंद कर देते हैं। परंतु रामचरितर घुटने नहीं टेकता है वह अन्त तक इसके विरुद्ध संघर्ष जारी रखता है। वह अपने और सरकार के बीच मुआवजे

की राशि को हथियाने वाले सरकारी पदाधिकारियों की नाजायज लोभ दृष्टि को फलीभूत नहीं होने देना चाहता है।

इसी संग्रह की कहानी 'मानरक्षा' में बूढ़े माली धनवा की आर्थिक स्थिति को दिखाया गया है बूढ़ा माली जीवन भर अपने मालिक के बगीचे की सेवा करता रहा परंतु बूढ़ा हो जाने के कारण उसे नौकरी से हटा दिया जाता है। इसके कार्य को नजरअन्दाज कर उसके आगे की जिन्दगी कैसे बीतेगी की चिन्ता से बेपरवाह होकर उसका मालिक उसे नौकरी से हटा देता है। उसका मालिक सेवा-मुक्ति के समय उसे गुलदस्ता भेंट करता है। धनवा सोचता है सम्पूर्ण जीवन की संचित पूंजी सिर्फ गुलदस्ता। यह गुलदस्ता उसे अपनी मानरक्षा का अनुभव तो कराता ही है साथ ही गुलदस्ता देकर वास्तव में उसके जीवन भर की ईमानदारी पर व्यंग्य किया गया है। 'घर और अस्पताल के बीच' कहानी त्रिकोणीय प्रेम पर आधारित है। कहानी में शैलेन्द्र और आभा के मध्य प्रेम हैं आभा अपने प्रेम के प्रति ईमानदार एवं एकनिष्ठ है जबकि शैलेन्द्र ऐसा नहीं है। जब वह आभा के सम्पर्क में आया तो उसने कई वादे किये। परंतु वह इंतहाई झूठे साबित हुए। शैलेन्द्र बेवफा निकला। उसका संबंध आभा के अतिरिक्त अन्यत्र भी चल रहा है। इस पर आभा दुःखी तो होती है परंतु अपने जीवन को शैलेन्द्र के लिए विवश नहीं बनाती है। आभा अपने भाई की सलाह से शैलेन्द्र को छोड़ मदन से विवाह करने के लिए तैयार हो जाती है। 'अवलंब' कहानी मोहन और वंदना नाम के प्रेमी-प्रेमिका के प्रेम की कहानी है। इनके बीच प्रेम ही इनके संबंधों की अस्थिरता का अवलंब है। 'पुनर्जन्म' इस कहानी में शंकर महतो नामक पात्र के जीवन की कथा के माध्यम से मनुष्य और प्रकृति के रोचक घटनाक्रम को जानने की जिजीविषा को व्यक्त किया गया है। जन्म-मरण का घटनाक्रम तथा पुनः नूतन जन्म या पुनर्जन्म जैसे तथ्यों पर दार्शनिक रूप से विचार किया गया है। उक्त कहानी संग्रह में समाज के प्रत्येक वर्ग की समस्याओं, आकांक्षाओं, अभिलाषाओं एवं संघर्षों पर प्रकाश डाला गया है। कहानी ही ऐसा माध्यम है जिसके जरिये सामाजिक कारणों पर अलग-अलग एवं भिन्न-भिन्न प्रकार से विचार किया जा सकता है। इस प्रकार देखा जाए तो ये सभी कहानियाँ किसी न किसी रूप में मनुष्य को समाज से जोड़ती है।

एक थाली समंदर (1987) :- इस कहानी संग्रह में अनंत जी की कुल चौबीस कहानियाँ संकलित हैं। 'एक थाली समंदर' शीर्षक कहानी में क्षमिया नामक वेश्या के एकनिष्ठ प्रेम को दिखाया गया है उसकी जिन्दगी में कई मर्द आते हैं फिर भी वह रामदत्तवा को ही प्रेम करती है। वह रामदत्तवा से किसी प्रकार की कोई कामना नहीं करती है बल्कि उसे देना ही चाहती है। 'घटाटोप अंधेरा' कहानी जेल में बन्द एक ऐसे कैदी की है जो अपने जीवन में आये 'घटाटोप अंधेरे' के विषय में सोच रहा है। वह सात वर्ष पश्चात् जेल से रिहा हो रहा है। रिहाई के दौरान वह अपनी प्रेमिका कल्याणी के विषय में सोच रहा है। इस कहानी का अन्त नहीं किया गया है। इसका

निर्णय पाठकों पर छोड़ दिया गया है। 'क्षितिज' में तेरह वर्षीय बालक के अद्भुत चरित्र को उद्घाटित किया गया है। 'अंधेरे उजाले के बीच' कहानी अनंत जी की बहुचर्चित कहानी है इस कहानी में अन्धे आश्विन से चित्रा विवाह कर लेती है क्योंकि आश्विन गिटार अच्छी बजाता है। आश्विन के अनुसार 'गाने वाले की सार्थकता उसके सुनने से होती है।' अपने पति से इस प्रकार की बात सुनकर चित्रा के मन में अपने सौन्दर्य की सार्थकता के विषय में 'अन्तर्द्वंद्व उत्पन्न हो जाता है। जब कोई बाहरी व्यक्ति उसके सौन्दर्य की प्रशंसा करता है तब वह दिखने के लिए और उत्सुक हो जाती है। अपने पति की बात सुनकर उसे लगता है कि उसके पति के लिए उसका सुन्दर होना या न होना क्या मायने रखता है ऐसी स्थिति में सुन्दरता का कोई अर्थ नहीं रह जाता है।

अब कल आएगा यमराज (2003) :- कहानी संग्रह में कुल बाईस कहानियाँ हैं जिनमें से आठ को लघु-कथा की श्रेणी में रखा जा सकता है। 'अब कल आएगा यमराज' कहानी एक ऐसी स्त्री की कहानी है। जिसका पति नशे के लिए तड़पता है। अपने पति को इस तड़प से बचाने के लिए वह अपने मंगलसूत्र को बेच उसके लिए व्यवस्था करती है। 'नयी तलाश' कहानी में नेताओं के झूठे आश्वासनों पर तीखा व्यंग्य किया गया है। "वह चुनाव का मौसम था। राजनीति की सरगरीमी थी। बरसाती मेंढकों का बोलबाला था। हर जगह पर लाउडस्पीकर से आती हुई बिना शब्दों की अस्पष्ट आवाजें थीं। वह आवाजें अब भी उसके कान में बज रही थीं। बहुत सारी नौकरियाँ, सभी के लिए नौकरी, सभी बेकारों को नौकरी मिलेगी। शीघ्र मिलेगी। नौकरी! नौकरी! नौकरी!!"⁵ 'रिश्ते' कहानी में पति की शारीरिक कमी के कारण तलाक ले चुकी औरत पर सामाजिक रूप से उठते सवालों के कारण उसके अन्तर्मन की दुविधा को अभिव्यक्त किया गया है। 'अपने लोग' कहानी में 'नेताओं के चुनाव पूर्व वादे और जीतने के पश्चात् अहमन्यता और संवेदनशीलता का चित्रण किया गया है। 'कड़वी रोटी' में नौकरीपेशा पति-पत्नी के व्यस्ततम जीवन की कहानी कहता है। 'वह आजादी' में दिखाया गया है, कि किस प्रकार दलगत निष्ठा के चलते समाज अलग-अलग खेमों में बंट जाता है। 'हैलो, मैं प्रधानमंत्री के दफ्तर से बोल रहा हूँ' कहानी के माध्यम से 'एप्रोच' एवं नाम के आधार पर अपना काम साधने वाले मौकापरस्त लोगों पर व्यंग्य किया गया है। 'राजनीति की अदालत' में मंत्री की पर्सनल सेक्रेटरी के अन्तर्द्वंद्व को दिखाया गया है। राजनीति में फैले कीचड़ से वह मानसिक रूप से जूझती रहती है। वह सौन्दर्य लोलुप मंत्रियों के चारित्रिक व्यवहार पर व्यंग्य करती है। दलगत राजनीति की आपसी खींचातानी और पारस्परिक वैमनस्य से तंग आकर वह पुनः पत्रकारिता के पेशे को अपना लेती है। 'फिजुल' एक ऐसे युवक की कहानी है जो योग्यता के बावजूद सरकारी नौकरियों में फैले भ्रष्टाचार के कारण नौकरी प्राप्त नहीं कर पाता है। नौकरी न मिलने के कारण वह भी उसी का हिस्सा बन जाता है। 'अपना जहान' नामक कहानी दाऊद सुलेमान नामक पिता की है जो अपनी जीवन-भर की कमाई को अपने पुत्र के हाथों लुटते देखने के लिए अभिशप्त है। इसमें सम्पन्न युवा वर्ग के बीच मेहनत के मूल्य को समझाया गया है। इस प्रकार सभी कहानियाँ मॉरिशस के समसामयिक जीवन के यथार्थ को

अपने युगीन परिदृश्य में अभिव्यक्त करने में पूर्ण रूप से सक्षम हो पायी है। सामाजिक यथार्थ के साथ सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का भी सजीव चित्रण हुआ है। इन कहानियों के माध्यम से आम जन-जीवन, उनके संघर्ष समाज में व्याप्त विसंगतियों, विद्रूपताओं, पूंजीपतियों के शोषण, महंगाई की मार, नारी-पुरुष संबंध, अन्तर्जातीय एवं अन्तःधार्मिक विवाह की जटिलताओं एवं राजनीतिक भ्रष्टाचार पर बड़ी सूक्ष्मता से विचार किया गया है।

सन्दर्भ सूची-

1. अग्रवाल, डॉ. सतीश चन्द्र, (2012) 'मॉरिशस का हिंदी साहित्य : एक समृद्ध परम्परा' आधारशिला प्रकाशन, बड़ी मुखानी, हल्द्वानी, पृ. 142
2. अग्रवाल, डॉ. सतीश चन्द्र, (2012) 'मॉरिशस का हिंदी साहित्य : एक समृद्ध परम्परा' आधारशिला प्रकाशन, बड़ी मुखानी, हल्द्वानी, पृ. 144
3. अग्रवाल, डॉ. सतीश चन्द्र, (2012) 'मॉरिशस का हिंदी साहित्य : एक समृद्ध परम्परा' आधारशिला प्रकाशन, बड़ी मुखानी, हल्द्वानी, पृ. 157
4. अनत, अभिमन्यु (1976) 'खामोशी के चीत्कार' प्रथम संस्करण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 20
5. अनत, अभिमन्यु (2010) 'अब कल आएगा यमराज' ज्ञान गंगा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 10

डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता
प्रवक्ता, अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
गंगापुर सिटी (राज.) 322201
दूरभाष सं. 9462607259
email: dineshg.gupta397@gmail.com